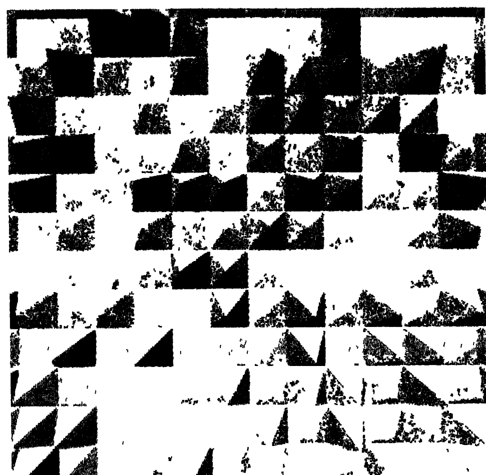
यथार्थवाद

पुनर्मूल्यांकन



डॉ. अजब सिंह